(01.10.2020)

B.A. Part-II
Economics (Hons.)
Paper-II (Public Finance)

Prof. (Dr.) Bipin Kumar
Professor In-charge
R.R.S. College, Mokama
PPU, Patna.

Topic: Public Expenditure and Private Expenditure.

Topic: Explain difference between public expenditure & private expenditure.

Ans: यह सर्वविदित है कि अर्थशास्त्र में जो स्थान उपभोग का है -- राजस्व में वही स्थान सार्वजनिक व्यय का है। सार्वजनिक व्यय की पूर्ति के लिए ही सरकार करारोपण करती है एवं सार्वजनिक ऋणों का सहारा लेती है। वर्तमान समय में बीसवीं शती में समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार के साथ ही सार्वजनिक व्यय का महत्व काफी बढ़ गया है। प्रो॰ कीन्स ने वर्ष 1936 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "General Theory of Employment, Interest and Money" में मंदी एवं बेरोजगारी को दूर करने के लिए सार्वजनिक व्यय को काफी महत्वपूर्ण हो गया है। सार्वजनिक व्यय के बढ़ते हुए महत्व को निम्नलिखित रूप में बतलाया गया है:

1. आर्थिक विकास
2. आर्थिक स्थायित्व
3. आय एवं सम्पत्ति की असमानता को दूर करने पर जोर (व्यय)
4. उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव एवं
5. वितरण पर अनुकूल प्रभाव।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक व्यय का महत्व क्यों महत्वपूर्ण हो गया है एवं लगातार बढ़ता जा रहा है। अब हम सार्वजनिक व्यय एवं निजी व्यय (Distinction between Public Expenditure and Private Expenditure) के बीच अन्तर स्पष्ट करेंगे:

अन्तर का आधार	सार्वजनिक व्यय	निजी व्यय
1. क्षेत्र	सार्वजनिक व्यय का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है।	निजी व्यय का क्षेत्र व्यक्तिगत ही होने के कारण सीमित होता है।
2. उद्देश्य	सार्वजनिक व्यय का उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण है।	निजी व्यय के व्यक्ति को प्रत्येक व्यय से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होने की आशा रहती है।
3. लाभप्रदता	सार्वजनिक व्यय में प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता।	निजी व्यय के व्यक्ति को प्रत्येक व्यय से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होने की आशा रहती है।
4. आय एवं व्यय का समायोजन	सार्वजनिक व्यय के आधार पर सार्वजनिक आय का समायोजन किया जाता है।	निजी आय के आधार पर निजी व्यय का समायोजन किया जाता है।
5. नियंत्रण	सार्वजनिक व्यय का नियमन संसद द्वारा किया जाता है और प्रत्येक सार्वजनिक व्यय के लिए पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।	निजी व्यय पर व्यक्ति विशेष का ही नियंत्रण होता है, किसी अन्य से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक नहीं।

27
THURSDAY - AUGUST
AUGUST 2020
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31
M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
WK-35 • 240-126
Appointments

अन्तर का आधार	सार्वजनिक व्यय	निजी व्यय
⑥ लोचशीलता	सार्वजनिक व्यय की प्रकृति लोचपूर्ण होती है क्योंकि उद्देश्य कल्याण करना होता है अर्थात् सार्वजनिक व्यय की प्रकृति मुख्यतः लोचदार होती है।	निजी व्यय की प्रकृति लोचपूर्ण होती है क्योंकि इसमें सरलतापूर्वक वृद्धि अथवा कमी की जा सकती है।
⑦ मितव्ययिता	सार्वजनिक व्यय में सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए मितव्ययिता पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।	निजी व्यय में व्यक्तिगत कल्याण सुनिश्चित करते हुए मितव्ययिता का ध्यान रखा जाता है।
⑧ ऐच्छिकता	सार्वजनिक व्यय ऐच्छिक नहीं होता क्योंकि सामाजिक कल्याण के लिए सार्वजनिक व्यय करना आवश्यक होता है।	निजी व्यय ऐच्छिक होता है क्योंकि यह व्यक्ति की अपनी इच्छा पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त महत्व एवं अन्तर के आधार पर यह स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास एवं राज्य के कार्यों में विस्तार होने के साथ-साथ सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के व्ययों में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।